परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : 07759863369

तक्ष शिला

बाल संवाद

प्यारे दोस्त.

तुम्हारे हाथों में मैं हूँ 'चहकने की ललक'। मेरा नाम थोड़ा बड़ा सा तो है लेकिन काफी कुछ समेटे हुए है। तुम बच्चे सब उस नन्ही सी मासूम चिड़िया की तरह हो जो खुले आसमान में उड़ना चाहती है, अपनी अलग सी आवाज में चहकना चाहती है। तुम्हे पता है इसी खुले से चहक को, इसी लेखनी की उड़ान को और चित्रों की अन्दर छिपी दुनिया को मैं लेकर आई हूँ। और जब तुम मुझे बोलते हुए पढोगे, सुनोगे और दूसरों को देखोगे सुनाओगे तो पता है तुम्हे मुझमें अपने आस–पास के बच्चों के चहकने का धीमा–धीमा सा शोर सुनाई देगा। जहाँ एक ओर सफलता के अरमान और फूस का घर जैसी अच्छी सी कहानियां पढने को मिलेगी, दूसरी तरफ वर्षा बहार नटखट बचपन जैसी चटपटी कवितायेँ सुनाने को मिलेगी। साथ ही अपनी बात, आई खबर दूर से, करने को कुछ और खुले से प्रश्न भी मिलेंगे। खूब पढना और लिखना। मै तो चाहूंगी कि अगली बार के अंक में तुम्हारी लेखनी की चहक मैं सबों के सामने ला पाऊं। तो पढो और अपने दोस्तों, शिक्षकों को भी बताओ कि कैसी लगी तुम्हे मैं।

ठीक है ना!
तुम्हारी दोस्त,
चहकने की ललक

हमार बोली में

ननकु

सबेरे उठ के ननकु अपना दादी के पास पहुँच गईल। ननकु के दादी बोललली, का रे ननकुवा स्कूल न जाइबे। तब ननकुवा बोललस, हमार स्कूल में आज बारिश आइल बा, एही से आज हम स्कूल ना जाईम। स्कूल में हमार घुटना भर पानी भईल बा। वुहान हम डूब जायेम।

जुली कुमारी, कक्षा 6, नरेन्द्रपुर

कविता

बारिश का सन्नाटा

बारिश का दिन आया है
चारों तरफ सन्नाटा छाया है
बारिश आँधियों को संग लाया है
सारे वृक्षों को हानि पहुँचाया है
बारिश का दिन आया है।
पुरे गाँव में कीचड है फैला
मुश्किल है घरों से अब निकलना
जब अन्दर घर के पानी आता
गरीबों की मुश्किल और बढाता
देखो फिर बारिश का दिन आया है
चारों तरफ सन्नाटा छाया है।

सुनील कुमार, कक्षा 7, भरौली

कविता

मेरा गाँव

मैं गाँव में रहता हूँ
दही–चूड़ा खाता हूँ
स्कूल रोज जाता हूँ
लंच के बाद घर आता हूँ
जब मैं बड़ा हो जाऊँगा
स्कूल नहीं कॉलेज जाऊँगा
मैदान में खूब खेलूंगा
बच्चों को खेल खेलाऊँगा
अपने गाँव के बच्चों को
बोलिंग मैं कराऊंगा
बैटिंग भी सिखाकर उनको
अच्छा क्रिकेटर बनाऊंगा।

मिथिलेश कुमार, कक्षा 7, भरौली

कहानी

सफलता के अरमान

एक लड़की थी उसका नाम संजु था। वह जब भी पढने को कहती थी तो उसकी माँ कहती कि, तुम पढ़कर क्या करोगी। संजु के माता–पिता बहुत गरीब थे जो परिवार का पेट नहीं पाल सकते थे और संजु कहती थी मैं पढूंगी पर जब माँ ने कहा कि पढ़ कर क्या करोगी तो संजु ने कहा कि मैं पढूंगी और अपने देश की रक्षा करुँगी। संजु का छोटा भाई आंगनबाड़ी जाता था। संजु कहती कि मैं भी आंगनबाड़ी जाउंगी तो माँ उसे डांट कर शांत करा देती। संजु ये जानती थी कि माँ और बाबुजी उसे स्कूल जाने नहीं देंगे तो उसने ही एक उपाय सोचा– क्यूँ न मैं घर के काम करने के बाद पढने जाऊं और माँ–बाबा के आने से पहले आ जाऊं। उसे यह उपाय अच्छा लगा और माँ–बाबूजी को बिना बताये पढने जाने लगी। उसके पढने की ललक को देख कर उसकी टीचर ने उसका नाम छात्रवृत्ति के लिए दे दिया। कुछ दिनों बाद सरकार की तरफ से संजु के छात्रवृत्ति का पैसा आया। जब टीचर ने संजु को बताया तो वह बहुत खुश हो गयी लेकिन वह अपने माँ–बाबूजी को बताने से डर रही थी। टीचर को पता चला तो वह संजु को साथ ले कर उसके माँ– बाबूजी के पास गयी और उन्हें छात्रवृत्ति के बारे में बताया। यह सुनकर उसके माँ–बाबूजी की आँखों से खुशी और पश्चाताप के आंसू गिरने लगे। उन्होंने संजु को गले से लगा लिया और उसका नामांकन स्कूल में करा दिया। संजु की खुशी का तो ठिकाना ही नहीं था। संजु मेहनत और लगन से पढाई करने लगी और बड़े होकर अपने गाँव की कलेक्टर बनी। उसने अपने गाँव के विकास पर पूरा ध्यान दिया। आज उसके अरमान पुरे हो गए थे।

दीप्ति कुमारी, कक्षा 8, नारायणपुर

आई खबर दूर से–

स्पीक मैके संगीत समारोह

इस अक्तूबर परिवर्तन परिसर शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य की छटा से विभोर हुआ। स्पीक मैके तथा तक्षिला के सहयोग द्वारा आयोजित इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में आस–पास के स्कूली बच्चों को संगीत जगत के तीन महारथियों की कला का अनुभव करने का अवसर मिला। जहाँ एक तरफ सुश्री रानिता डे ने इतनी सरलता से रागों का भेद बताते हुए अपने ख्याल वादन से हमें बाँधा, वहीं दूसरी ओर श्रीमती मालती श्याम ने घुँघरू के जादू से अपने कत्थक नृत्य में हमें रिझाया। साथ ही श्रीमती सासकीया रॉव–डी हास ने हमारा परिचय सारंगी से मिलते–जुलते एक अति सुरीले वाद्य यंत्र से कराया जिसे चेलो कहते हैं। चेलो की तान, घुँघरू की झंकार एवं बंदिश के स्वर हम सब को लुभा गए।

बाल संगम

कुछ दिनों पहले बाल दिवस के अवसर पर परिवर्तन प्रांगण में बाल संगम आयोजित किया गया था। बहुत सारे स्टाल लगे थे और हम सब बहुत खुश थे। एक मेले सा माहौल था। हम सब उस दिन इधर उधर घूमने, भागने दौड़ने, हल्ला मचाने को आजाद थे। विज्ञान में कुछ भैया ने बहुत अच्छे अच्छे से खिलौने बनाये थे और उन्हें समझा भी रहे थे। इसमें एक अनाड़ी गाड़ी थी जो चक्के को पीछे घुमाने के बाद सर्र से आगे भागती। एक चापाकल भी था जो सोंय से पानी फेंकता। गोटी ट्रेन, बांस वाली सीटी, पेरिस्कोप, बिजली वाला चुबक, हाथ का बनाया हुआ टार्च और भी बहुत कुछ था। हम उस दिन पतंग भी बनाये, अपना वजन और लम्बाई भी नपवाए, अलग अलग आकार और रंग के टुकड़ो से सुन्दर सा सूरज बनाये। और तो और खेलने के लिए भी सब था– हैण्ड बॉल, फुटबॉल, बैडमिंटन। एक ऐसा खेल था जिसमे गेंद को उछाल कर ऊँचे खम्बे से टंगे टोकरी में डालना था। हम तो दूसरी बार में फेंक पाए। अंत में हमें एक चौड़ा सा मोटा कागज मिला जिसमे परिवर्तन का फोटो था। बहुत खुशी ही अन्दर ही अन्दर कि जाकर सबको दिखायेंगे और बताएँगे कितना मजा आया। बस कुछ ऐसा रहा था बाल संगम।

कहानी

फूस का घर

एक लड़का का घर फूस का था। वो स्कूल में हमेशा अव्वल आता था। उसका घर बारिश के मौसम में चुने लगता था। इस वजह से उसे सारे बच्चे चिढ़ाते थे। वह एक दिन गुस्सा हो गया और अपने माँ से जाकर बोला, माँ मुझे सब क्यूँ चिढ़ाते हैं। माँ बोली बेटे हम लोग गरीब हैं, इस वजह से हमें कमजोर समझते हैं। लेकिन तुम पढ़ लिख कर बड़ा आदमी बनो जिससे लोग गरीबों को कमजोर ना समझें। एक दिन की बात है वह लड़का स्कूल जा रहा था। उसे अमीर घर के लड़कों ने खूब मारा तो वह रोते हुए घर आया और फिर सुबकते हुए पढने लगा। उसकी माँ पूछी, सुबह से परेशान लग रहे हो, जाओ हाट से सब्जी ले आओ। जब वह बाजार में सब्जी खरीदने गया तो उसे लोग बोले जाओ बाद में आना। वह घर आ गया। कुछ दिन बाद परीक्षा में वह फर्स्ट आया। इससे चिढ़कर अमीर घर के बच्चों ने उसकी पिटाई करवा दी। एक दिन उसकी माँ ने उसे पढने के लिए रात को शहर भेज दी। गाँव वाले उसकी माँ को बहुत दुःख दिए। जब वह शहर गया तो एक होस्टेल में कमरा लिया। उस होस्टेल में एक ही कमरा खाली था और वहां एक अमीर लड़का रहता था। उस अमीर लड़के ने कमरे को दो भाग में बाँट दिया और जब कभी भी गरीब लड़का लाइन के उधर जाकर किताब कलम लेता तो वह अमीर घर का लड़का उसको डांटता था। बहुत दिन बाद वह I.P.S. बनकर गाँव आया और अपना घर बनवाया और सारे गरीबों की मदद भी की। वह गरीब लड़के/लड़कियों को पढाया करता था। और आज वह बारिश में बैठकर अपनी बचपन की बातों को याद कर रहा था।

सुष्मिता पाण्डेय, कक्षा 9, बड़हुलिया

खुले से प्रश्न

सोचो कभी ऐसा हो जाए कि तुम्हे दो बहुत मोटे रोलर के बीच डालकर छपते कागज जैसा बना दिया जाए, पर फिर भी तुम बोल, सुन, सूंघ, चख, और छू सकते हो तो तुम खुद को किस–किस इस्तेमाल में लाओगे?

बच्चो के कुछ जवाब– तो मैं चाहूँगा कि कोई मुझे मोड़कर जहाज बना दे और उसके नोंक पर पिन भी लगा दे, ताकि अगर कोई कहे कि यह जहाज सही नहीं है तो मैं उड़कर उसके शरीर में चुभ जाता। (मंजीत, कक्षा 8)

तो पेडों पर फंस कर खूब हवा खाते, नदियों में जाकर तैरते, उड़ते–उड़ते फूलों के पास से गुजरते हुए फूलों का महक सूंघते। (पल्लवी, कक्षा 6)

कविता

प्यारा न्यारा बचपन

बचपन बड़ी सुहानी है
लगती ये सबको प्यारी है।
लेकिन जिसका बचपन बीत गया
वह कितना मजबूर हुआ।
बचपन तो है छैल–छबीली,
दिखने में लगती रंगीली,
ये होती है कितनी प्यारी,
लगती है ये सबको न्यारी।
बड़े होने के बाद,
याद आती है वो बातें सारी,
खुशी के मारे झूम उठते हैं
अंग– अंग हम सबके।
याद करते है उन बातों को
रातों को जग–जग के।

साधना कुमारी, कक्षा 8, बड़हुलिया

कविता

नटखट बचपन

बचपन होता है बड़ा नटखट
करते काम सभी हम झटपट
बचपन होता है बड़ा नजारा
रहता है वो आँखों का तारा
बचपन में हम स्कूल जाएँ
झगड़ा करें और डांट खाएं
बचपन हो सबका प्यारा
लगता सबका राज दुलारा
बच्चे हम बलवान बनेंगे
दुश्मन को हैरान करेंगे
जो बचपन को खोया
वो पछतायेगा, बूढा हो जाएगा
बचपन में हम मेले जाएँ
चाट पकौड़ी समोसे खाए
बचपन होता बड़ा ही नटखट
करते काम सभी हम झटपट
खेले बचपन में हम फटाफट
बचपन होता है बड़ा नटखट।

रजत कुमार, कक्षा 7, बड़हुलिया

अपनी बात

खेलते–कूदते हम

मैं छोटी थी तो मैं सीमा के साथ लुका–छिपी खेल रही थी। सीमा ने खेलते–खेलते झगडा कर ली तो हमको खेल नहीं खेली। सीमा रोते हुए अपने घर चली गयी। मैंने घर जाकर बात बताई कि सीमा और हम लुका छिपी खेल रहे थे तो सीमा ने बोली मैं नहीं खेलूंगी। मैं बोली जाओ जाओ अपने घर इसलिए सीमा रोते–रोते घर चली गयी। संध्या बोली चलो हम और तुम कबड्डी खेलकर शाम हो जाएगा तो मैं चली जाउंगी। हम और संध्या कबड्डी खेलने लगे। शाम हो गयी तो संध्या अपने घर चली गयी। और मैं खाना खाकर सो गयी।

जुली कुमारी, कक्षा 6, नरेन्द्रपुर

कविता

बर्षा बहार

बर्षा आया झिर–झिर
चिड़िया बोली चूं–चूं
निकल पड़ी बच्चों की टोली
तैरा आई कागज की नाव
बच्चों ने जब धूम मचाया
तब एक बूढ़ा आया
फिसल गयी उनकी जब लाठी
बच्चों ने की फिर खूब चिढाई
बूढ़े बाबा को खूब गुस्सा आया
जब बच्चों ने धूम मचाया

दीपिका कुमारी, कक्षा 8, बड़हुलिया

अपनी बात

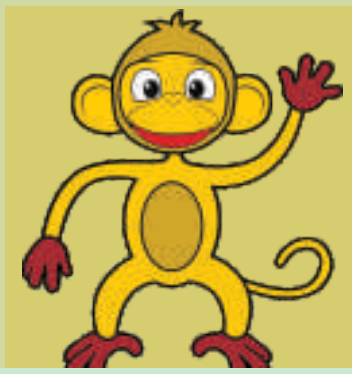

सहेली के संग खेलमदारी

मेरा बचपन मुझे बहुत ही अच्छा लगता था। मैं एक बार अपने सहेली के साथ स्कूल जाने के लिए घर से निकली तो रास्ते में एक खेल–मदारी दिखा रहा था। उसके आस–पास बहुत सारे लोग जमा थे और सब खेलमदारी देख रहे थे। मैं अपनी सहेली से बोली कि चलो, हम दोनों भी खेलमदारी

देखते हैं। मेरी सहेली बोली, नहीं हमें देर हो जायेगी, तो मैं बोली अभी तो बहुत समय है, चलो हम दोनों थोड़ी देर देखकर चलेंगे। फिर मैं और मेरी सहेली देखने चले गए और हम लोगों ने देखा की एक भालू नाच रहा था जिससे सारे बच्चे और लोग देखकर हंस रहे थे। हम दोनों भी खूब हंस रहे थे। हमें स्कूल के लिए देर हो गयी और जब हम दोनों स्कूल पहुंचे तो हमें हमारी मैडम ने दो छड़ी लगाई। उसके बाद मैं देर से नहीं जाती।

नेहा कुमारी, कक्षा 8, बड़हुलिया

कहानी

ये वादा रहा

एक गाँव में एक लड़की रहती थी। उसका नाम अंजलि था। वह पढने में बहुत तेज थी। वह विद्यालय जाना चाहती थी। लेकिन उसके माता–पिता उसे मना करते थे। वे कहते थे कि तुम केवल घर का चौका बर्तन और खेत पर भी काम करो। लेकिन वह देश समाज की सेवा करना चाहती थी। एक दिन की बात है उसकी मम्मी की तबियत खराब हो गयी। उसके पापा, मम्मी को अस्पताल ले गए। अंजलि उस दिन पड़ोसन के घर जाकर काम कर रही थी। जैसे ही उसके कानों में यह बात गयी वह अस्पताल की ओर दौड़ पड़ी। अस्पताल में पहुँचते ही उसका शरीर सुन्न हो गया। पापा रो रहे थे, मम्मी चुप थी। पापा क्या हुआ, कुछ तो बोलिए, मैंने पुछा। "क्या बोलूं, यहाँ पर कोई डॉक्टर नहीं था, इसलिए माँ हमें हमेशा के लिए छोड़ कर चली गयी"। मैं खूब रोई पर मैंने उस दिन तय किया कि मैं डॉक्टर जरुर बनूँगी चाहे कुछ भी हो जाए। ये मेरा वायदा रहा।

गुड़िया कुमारी, कक्षा 9, बड़हुलिया

पुरस्कृत कृतियाँ

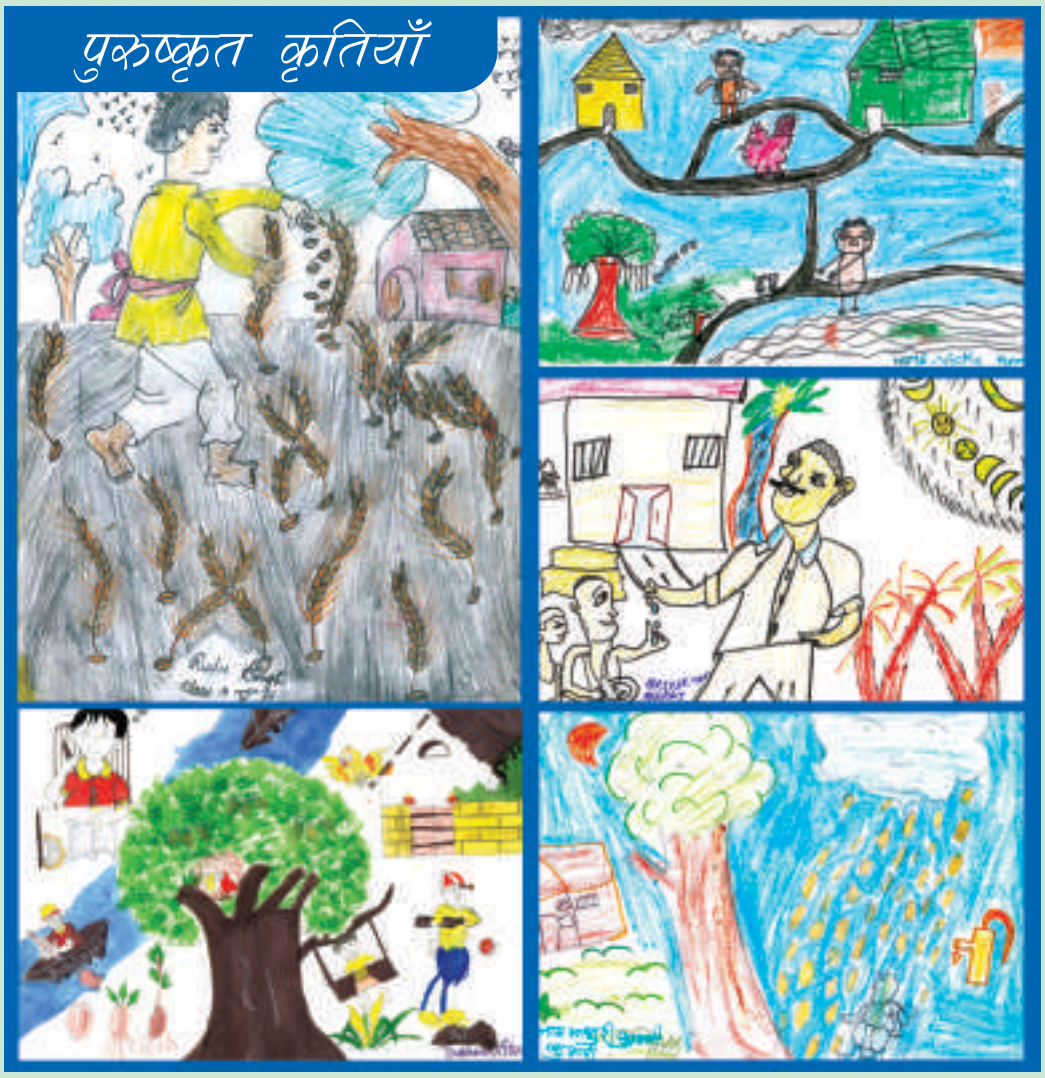

रोना धोना हमारा

अपनी बात

मैं बचपन में बहुत शरारत करता था। एक दिन मैं झुला पर से गिर गया और मैं रोने लगा तभी मेरी माँ मुझे उठाई और मैं हंसने लगा तो फिर मेरी माँ मुझे खेलने के लिए छोड़ दी तो अचानक एक बिल्ली घूमती हुई हमारे पास आई तो हमने उसका पूँछ पकड़ लिया तो वह हमें काट ली और फिर हम रोने लगे। जहाँ पर मुझे बिल्ली काटी थी वहां से बहुत खून बह रहा था तो मुझे एक सुई लगी तो मैं और तेजी से रोने लगा। यह बात मुझे आज तक याद है और जब भी मैं कभी सोंचता हूँ तो हंसने लगता हूँ।

रोहित कुमार, कक्षा 7, बड़हुलिया

कविता

होती है गाँवों में कठिनाई

होती है गाँवों में कठिनाई
सुनो मेरे भाई
नालों की है कमी यहाँ
सडकों पर पानी जमा यहाँ
इसी से गिरती बुढ़िया भाई
होती है गाँवों में कठिनाई
सुनो मेरे भाई।
गाँवों में डॉक्टर नहीं रहते
पैसों के लिए शहर जा बसते
लोग मरते यहाँ बीमारी से
पैसा रहता तो ले जाते गाड़ी से
होती है गाँव में कठिनाई
सुनो मेरे भाई।
बिजली कम रहती है गाँवों में
बाधा आती हर काम में
नहीं हो पाती पढाई
होती है गाँव में कठिनाई
सुनो मेरे भाई।
गाँवों में शराब पीकर
आपस में झगड़ा करते
किसी को भी गाली देते
किसी की भी कर देते पिटाई
होती है गाँव में कठिनाई
सुनो मेरे भाई।

प्रदीप कुमार, कक्षा 8, भरौली

कविता

बेखबर बचपन

बचपन में था नहीं हमारा कोई काम
दिन भर खेलते मौज मनाते
चींटी का हम रास्ता काटते
बच्चों को हम मार रुलाते
घर आकर फिर डांट खाते
किसी को रुलाते, किसी को झगडा
लगाते
तब हमें कुछ समझ न आता
सिवा खेल के कुछ न भाता
काश फिर बचपन आ जाता।

दीपक कुमार, कक्षा 9, बलिया

करने को कुछ

बैलून की सीटी: दो समान आकार की बांस की पट्टी लो। इनके बीच में बैलून की झिल्ली लगाकर इसके दोनों सिरों को बाँध दो। अब बीच की जगह में मुंह से फूको, लो बन गयी तुम्हारी 'बैलून की सीटी'।

दहाड़ता कप: एक खाली प्लास्टिक कप ले लो। इसके पेंदी में छेद करके एक धागा लटका दो। इस धागे को भींगा कर अब इसे रगड़ते हुए खींचो। कप से कुछ अजीब सी आवाज़ निकलती मालूम पड़ेगी।

तक्षशिला पब्लिकेशन द्वारा परिवर्तन के लिए प्रकाशित।
सज्जा एवं मुद्रण: इमेजिका ग्राफिक्स